International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रामायण के अयोध्या काण्ड में निर्दिष्ट प्रशासनिक प्रबन्धन

शोधार्थी, मनीष कुमार
संस्कृत, प्राकृत एवं पालि विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
Email- m.arya14596@gmail.com

रामायणकालीन समाज मात्र साहित्यिक कल्पना नहीं है, अपितु प्रशासनिक व्यवस्था का जीवंत व पारस्परिक प्रेम का यथार्थ उद्दरण है। जहाँ राज्य के श्रेष्ठ पद पर आसीन राजा दशरथ से लेकर प्रजा के अंतिम छोर पर विद्यमान सामान्य जन अपने नायक राम के प्रति तन–मन–धन से समर्पित हैं। महर्षि वाल्मीकि के पूछने पर नारद ने राम के अनेक गुणों का वर्णन किया है। लेकिन उससे पूर्व वाल्मीकि ने नारद से अपने नायक के जिन गुणों की अभिकल्पना की है, उन पर भी विचार करना चाहिए अर्थात् वाल्मीकि ने नारद से पूछा निम्नलिखित निर्दिष्ट गुण किस पुरुष में हैं?[1]

गुणवान्, वीर्यवान्, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यवक्ता, दृढ प्रतिज्ञा, सदाचार से युक्त, समस्त प्राणियों का हितैषी, विद्वान्, सामर्थ्यशाली, एकमात्र प्रियदर्शन, मन पर अधिकार रखने वाला, क्रोध को जीतने वाला, कान्तिमान्, किसी की निन्दा न करने वाला, संग्राम में देवताओं से भी शक्तिशाली।

तत्पश्चात् नारद मुनि इक्ष्वाकुवंशज श्रीराम के दुर्लभ गुणों को बतलाते हैं।[2] जा इस प्रकार हैं–

इक्ष्वाकु कुलोत्पन्न, मन को जीतने वाले, महाबलवान्, कान्तिमान्, धैर्यवान्, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान्, नीतिज्ञ, वक्ता, शोभायमान, शत्रुसंहारक, सामुद्रिक विज्ञान की दृष्टि से सुन्दर शरीर, स्वधर्म व स्वजनों का पालक, वेद वेदांगों का तत्वेता, धनुर्वेद में प्रवीण, समस्त शास्त्रों के तत्वों को जानने वाला, उत्तम स्मरणशक्ति, प्रतिभाओं से युक्त, उत्तम विचार व उदार हृदय, समरसता का भाव, कालाग्नि के सदृश क्रोध, पृथिवी के सदृश क्षमा, कुबेर के सदृश त्याग, धर्मराज के सदृश सत्य

ऐसे श्रेष्ठ नायक के रूप में श्रीराम रामायण के अयोध्याकाण्ड में भरत कुशल प्रशासक की वार्ता करते हैं जो श्रेष्ठ प्रशासन की नींव और शिखर की शोभा है। जब किसी राज्य में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

श्रीराम के सदृश प्रजाहितैषी व प्रजा जिसे अपना आदर्श मानती हो तो स्वाभाविक है, प्रशासनिक व्यवस्था ऐसे गुणों से सर्वश्रेष्ठ ही हो जाती है।

रामायणकालीन मन्त्रीपरिषद्

इस्वाकु वंश मनु महाराज को श्रृंखला की कड़ी है, जिन्होंने राजधर्ग के निमित्त 'मनुस्मृति' नामक ग्रन्थ में प्रशासनिक व्यवस्थाओं का प्रतिपादन किया है, जिसमें राजा, मंत्री, सभा में उपस्थित सज्जन व प्रजा तक के दण्ड विधान, कर–प्रणाली के उचित नियम, न्यायिक प्रबन्धनादि देखने को मिलता है। उन्हीं का अनुकरण दशरथ, रामादि राजवंशी और रामायणकालीन प्रजा ने किया है।[3]

सुयोग्य मन्त्रियों के चयन को लेकर श्रीराम भरत से कहते हैं कि मन्त्री शूरवीर, शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, कुलीन तथा बाहरी चेष्टाओं से मन की बात को समझने वाले होने चाहिए।[4] सार्थक मन्त्रणा और नीतिनिपुण अमात्य ही राजाओं की विजय निर्धारित करती है।[5]

रामायणकालीन राजा स्वच्छन्दी न होकर कर्तव्यनिष्ठ होता था। उत्तराधिकारी को नियुक्ति के लिए मन्त्रियों व नागरिकों का समर्थन आवश्यक होता था।

सेनापति

श्रीराम भरत को सेनापति के उत्तम गणों की चर्चा करते हुए कहते हैं कि सर्वदा संतुष्ट रहने वाला, शूरवीर, धैर्यवान्, पवित्र, कुलीन एवं स्वानुरागी, रणक्षेत्र में दक्ष, पुरुष को ही सेनापति बनाना चाहिए।[6]

राजदूत

श्रीराम भरत को राजदूत के गुणों की वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि राजदूत अपने ही देश का निवासी होना चाहिए, विद्वान्, कुशल और प्रतिभाशाली होना चाहिए। जैसा कहा जाए वैसा ही दूसरों के सामने कहने वाला होना चाहिए। सत् और असत् को विवेकपूर्ण जानने वाला होना चाहिए।[7] राजदूत की प्रशासनिक प्रबन्धन में महत्वपूर्ण भूमिका को हम इस प्रकार भी समझ संकते है कि राम भरत से पूछते हैं कि क्या तुम शत्रुपक्ष के अठारह और अपने पक्ष की पंद्रह तीर्थो की अज्ञात तीन–तीन गुप्तचरों द्वारा जांच पड़ताल कराते हो?[8]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कर–व्यवस्था

श्रीराम भरत को बताते हैं कि राजा को प्रजा से उचित ही कर लेना चाहिए अन्यथा जिस प्रकार याजक (पुरोहित) पतित यजमान का तथा स्त्रियां कामचारी पुरुष का तिरस्कार देती हैं, उसी प्रकार अन्यायपूर्ण अधिक कर लेने के कारण राजा भी अनादर पाता है।[9] रामायणकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में कर प्रजा के संरक्षण व सामाजिक सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए लिया जाता है। सैनिकों को समय पर वतन देने के लिए कर–व्यवस्था की पालय सभी के लिए अनिवार्य माना जाता था। स्वयं श्रीराम भरत से पूछते हैं कि तुम सैनिकों को समुचित और समय पर वेतन देते हो अर्थात् विलम्ब तो नहीं करते।[10]

दुर्ग व्यवस्था

राज्य की सुरक्षा के निमित्त प्रशासनिक प्रबन्धन में दुर्गों की विशष भूमिका रही है। दुर्गों की मजबूती, उनमें उपयोगी साजो–सामान अर्थात् सैन्य सुविधाओं का उचित प्रबन्धन होना चाहिए अन्यथा शत्रु कभी भी आक्रमण करके विजयी हो सकता है। यह जानकारी श्रीराम स्वयं भरत से पूछते हैं कि क्या सभी तुम्हारे सभी दुर्ग अस्त्रशास्त्र, यन्त्र, शिल्पी और धनुर्धर सैनिकों से परिपूर्ण हैं।[11]

न्यायिक व्यवस्था

किसी भी राज्य में वहाँ की न्यायिक व्यवस्था महत्वपूर्ण स्थान रखती है। श्रीराम भरत से पूछते हैं कि तुम्हारे प्रशासन में पूरी तरह चोर की चोरी सिद्ध होने पर उसे धन के लोभ में छोड़ा तो नहीं जाता है?[12] तुम्हारे राज्य में धनी और गरीब के विवाद में भेदरहित न्याय किया जाता है? अर्थात् तुम्हारे मन्त्री धन के लोभ में अन्यायपूर्ण न्याय तो नहीं करते हैं?[12] राम कहते हैं कि हे भरत! जिस न्यायव्यवस्था में निरपराध पर मिथ्या दोष लगाकर रुलाया जाता है उसके आंसू राजा के पुत्र और पशुओं के नाश कर देते हैं।[14]

यानि मिथ्याभिशस्तानां पतन्त्याश्रूणि राघवः।
तानि पुत्रपशुन् घ्नन्ति प्रीत्यर्थमनुशासतः।।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समरसता व सम्मान

किसी भी राजा की प्रधानता तभी सार्थक मानी जाती है जब प्रजा के साथ उसका व्यवहार प्रेमपूर्ण हो। राजा समाज के प्रत्येक वर्ग का चाहे कोई बालक हो या वृद्ध या श्रेष्ठ वैद्य हो सभी का सम्मान यथोचित करना चाहिए।[15]

राजा को गुरुजनों, वृद्धों, तपस्त्वियों, देवताओं, अतिथियों, ब्राह्मणों का नमस्कार करके स्वागत समान करना चाहिए।[16]

दण्ड विधान

प्रशासनिक प्रबन्धन में अन्तिग व महत्वपूर्ण भूमिका दण्डविधान की होती है। धर्म के अनुसार दण्ड धारण करने वाला विद्वान् राजा ही प्रजा का समुचित पालन कर सकता है और सभी को अपने अधिकार में रखा सकता है। सम्यक दण्ड विधान करने वाला राजा ही देह त्याग करने के पश्चात् स्वर्ग का पात्र होता है।[17]

राजा की सावधानियां

श्रीराम ने भरत को अनैतिक राजा के चौदह दोषों से अवगत कराया है, जिसका परित्याग अवश्य ही करना चाहिए अन्यथा वह स्वयं के साथ–साथ राज्य के लिए घातक सिद्ध होता है। राम बतलाते है कि नास्तिकता, असत्य भाषण, क्रोध, प्रमाद, दीर्घ सूत्रता, ज्ञानी पुरुषों का संग न करने वाला, आलस्य, अजितेन्द्रिय, राजकार्यों के विधान में किसी के सलाह न लेने बाला, विपरीत बुद्धि वाले की सलाह मानना, निश्चित किए हुए कार्यों को शीघ्र प्रारंभ करने कला, गुप्त बात को सुरक्षित न रखना, शुभ कार्यों का अनुष्ठान न करने वाला और सभी शत्रुओं परएक ही बार में युद्ध के लिए आह्वाहन करने वाला ये राजा के दोष हैं अर्थात् कुशल राजा को इन दोषों की परित्याग का देना चाहिए।[18]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संदर्भ ग्रंथ

1. तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम्।।
को न्वास्मिन्साम्प्रतं लोके गुणवान्कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः।।
चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।
विद्वान्कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः।।
आत्मवान्को जितक्रोधों मतिमान्कोऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे।।
एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं परं कौतूहलं हि मे।
महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम्।। वाल्मीकि रामायण, वा० रा० वा० का० (1/1–5)

2. इस्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान्धृतिमानवशी।।
ज्येष्ठं श्रेष्ठगणैर्युक्तं प्रियं दशरथः सुतम्।
यौवराज्येन संयोक्नुमैच्छत्प्रीत्या महीपतिः।। बा० का० (1/8–19)

3. पुत्र इव पितृगृहे विषये यस्य मानवाः।
निर्भया विचरिष्यन्ति स राजा राजसत्तम।।
यथा पुत्रः पितृगृहे विषये यस्य मानवाः।
निर्भया विचारिष्यन्ति स राजा राजसत्तम्।। मनुस्मृति (7)

4. कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः।
कुलीनाश्चेङ्गितज्ञाश्च कृतास्ते तात मन्त्रिणः।। अयोध्या काण्ड 100/15

5. मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव।
सुसंवृन्तो मन्त्रिधुरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः।। अयोध्या काण्ड 100/16

6. वहीं (100/17)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

7. कच्चिद् जनपदो विद्वान् दक्षिणः प्रतिभावान्।

यथोक्तवादी दूतस्ते कृतो भरत पण्डितः।। अयोध्या काण्ड (100/35)

8. वहीं (100/36)

9. अयोध्या काण्ड (100/28)

10. वहीं, अयोध्या काण्ड (100/32)

11. कच्चिद् दुर्गाणि सर्वाणि धनधान्यायुधोदकैः।

यन्त्रैश्च प्रतिपूर्णाणि, तथा शिल्पीधनुधरैः।। अयोध्या काण्ड (100/53)

12. वहीं, (100/57)

13. वहीं (100/58)

14. वहीं (100/59)

15. वहीं (100/60)

16. वहीं (100/61)

17. राजा तु धर्मेण हि पालयित्वा महीपतिर्दण्डधर प्रजानाम्।

अवाप्य कृत्स्नां वसुधां यथावदितश्च्युतः स्वर्गमुपैति विद्वान्।। अ० का० (100/75)

18. अयोध्या काण्ड (100/65–67)